विस्तृत प्रतिवेदन

हिन्दी सप्ताह समारोह

09-14 सितम्बर 2025

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
आईयूसीटीई कैंपस, सुंदर बगिया, नरिया-बीएलडब्ल्यू रोड, वाराणसी - 221005

Inter University Centre for Teacher Education
(An Autonomous Institution of UGC, MoE, Govt. of India)

© IUCTE, September, 2025

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored or distributed in any form or by any means, electronics or mechanical, magnetic tape, including photocopying, recording or otherwise, without written permission from the publisher.

Published by Senior Administrative Officer,
Inter University Centre for Teacher Education (IUCTE)
Banaras Hindu University, Sundar Bagiya, Nariya-B.L.W. Road, Varanasi-221005
Design & Layout by Shubham Prajapati (Technical Assistant, IUCTE) & Printed at Jembo Photo State & Internet, Varanasi

निदेशक की कलम से

हिन्दी मात्र अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, अपितु हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान, एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आवाज़ है। यह वह सूत्र है जो विविधतापूर्ण भारत को एक माला में पिरोता है और वैश्विक स्तर पर हमारी विशिष्ट पहचान को रेखांकित करता है। 14 सितम्बर का दिन हमारे लिए केवल एक संवैधानिक औपचारिकता नहीं, बल्कि अपनी भाषाई जड़ों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने और आत्मगौरव के बोध का उत्सव है।

इस वर्ष हिन्दी सप्ताह के अवसर पर अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र (आई.यू.सी.टी.ई.), वाराणसी द्वारा "हिन्दी : एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आवाज़" विषय पर आयोजित यह कार्यक्रम अत्यंत सामयिक है। आज विश्व के विद्वान हिन्दी को शांति, योग और मानवीय संवेदनाओं की भाषा के रूप में देख रहे हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के आलोक में हमारा यह दायित्व और भी बढ़ जाता है कि हम प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक भारतीय भाषाओं को सम्मान दें। हमें हिन्दी को केवल भावों की भाषा तक सीमित न रखकर इसे नवाचार, अनुसंधान और आधुनिक तकनीक की समर्थ भाषा बनाना होगा। जब हम अपनी भाषा में चिंतन और शोध करेंगे, तभी वास्तविक मौलिकता का उदय होगा।

मैं आह्वान करता हूँ कि हम हीन भावना का परित्याग कर दैनिक जीवन में हिन्दी को अपनाएँ। अपने हस्ताक्षर से लेकर अपने संवाद तक में हिन्दी का प्रयोग कर हम इसे 'स्वाभिमान की भाषा' के रूप में प्रतिष्ठित कर सकते हैं।

मैं इस गरिमामयी आयोजन के सफल संपादन हेतु सभी विद्वान वक्ताओं, आयोजकों और केंद्र के सभी सदस्यों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस आयोजन ने हमारे शिक्षकों और शिक्षार्थियों के भीतर भाषाई चेतना और गौरव का नया संचार किया होगा।

प्रो. प्रेम नारायण सिंह
निदेशक

शुभकामना संदेश

हिन्दी दिवस मात्र एक तिथि नहीं, अपितु हमारी भाषिक अस्मिता और सांस्कृतिक गौरव के पुनर्जागरण का पर्व है। यह वह सेतु है जो उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक सम्पूर्ण राष्ट्र को भावनात्मक एकता के अटूट सूत्र में बाँधता है। हिन्दी की शक्ति उसकी समावेशी प्रकृति और लचीलेपन में निहित है, जिसने विश्व की अनेक भाषाओं को सहर्ष अपने भीतर समाहित किया है।

हिन्दी सप्ताह के अवसर पर आयोजित इस संगोष्ठी का विषय 'हिन्दी : एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आवाज़' वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में अत्यंत प्रासंगिक है। आज जब विश्व शांति और मानवीय मूल्यों की खोज कर रहा है, तब हिन्दी अपनी लोकवाणी, संतों की परंपरा और सांस्कृतिक विरासत के माध्यम से एक वैश्विक मार्गदर्शक के रूप में उभर रही है। विदेशी विद्वानों का हिन्दी के प्रति बढ़ता अनुराग और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इसकी गूँज इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी अब केवल संवाद की भाषा नहीं, बल्कि वैश्विक विमर्श की एक समर्थ भाषा बन चुकी है।

अकादमिक एवं शोध की दृष्टि से, हमारा यह उत्तरदायित्व है कि हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संकल्पों को आत्मसात करें। हमें उच्च शिक्षा और शोध के क्षेत्र में हिन्दी को एक उत्कृष्ट ज्ञान-भाषा (नॉलेज लैंग्वेज) के रूप में प्रतिष्ठित करना होगा। जब हम अपनी मातृभाषा की जड़ों से जुड़कर मौलिक शोध और नवाचार करेंगे, तभी हम वैश्विक स्तर पर अपनी वास्तविक बौद्धिक पहचान बना पाएंगे।

इस अवसर पर, मैं सभी वक्ताओं, शोधार्थियों और सहयोगियों को इस सफल आयोजन के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि इस आयोजन ने हमारे भीतर की भाषाई हीन भावना को समाप्त कर हमें अपनी संस्कृति और भाषा के प्रति अधिक गौरवान्वित और आत्मविश्वास से परिपूर्ण किया होगा।

सादर,

प्रो. आशीष श्रीवास्तव
संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	कार्यक्रम के बारे में	1-2
2.	अतिथि परिचय	2-3
3.	विस्तृत रूप में कार्यक्रम	4-9
4.	हिन्दी सप्ताह समारोह के अंतर्गत अन्य कार्यक्रम	10-11
5.	समाचार पत्रों में	12
6.	आयोजन समिति	13
7.	कार्यक्रम की झलकियाँ	14

कार्यक्रम के बारे में

हिन्दी सप्ताह-2025 के उपलक्ष्य में अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आई.यू.सी.टी.ई.), वाराणसी द्वारा 'हिन्दी : एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आवाज़' विषय पर आयोजित यह संगोष्ठी अपनी व्यापकता और वैचारिक गहराई में अभूतपूर्व रही। प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाने वाला 'हिन्दी दिवस' मात्र एक कैलेंडर की तिथि नहीं है, अपितु यह हमारी सहस्त्र वर्षों की भाषाई अस्मिता, साझी विरासत और राष्ट्रीय गौरव के आत्म-बोध का महापर्व है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा द्वारा हिन्दी को भारत की 'राजभाषा' के रूप में स्वीकार किया जाना केवल एक व्याकरणिक या भाषिक निर्णय नहीं था, बल्कि यह औपनिवेशिक दासता की बेड़ियों को काटकर अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने का एक दृढ़ संकल्प था। राजभाषा के रूप में हिन्दी का महत्व आज इसलिए और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है क्योंकि यह हमारे लोकतांत्रिक ढांचे को समावेशी बनाती है; यह वह सेतु है जो जटिल प्रशासनिक शब्दावलियों और आम जनता की लोकवाणी के बीच की खाई को पाटकर शासन को पारदर्शी और जन-केंद्रित बनाता है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी की भूमिका केवल एक 'संपर्क भाषा' (Link Language) तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की बढ़ती संप्रभुता और 'विश्व-गुरु' के रूप में हमारी वैचारिक नेतृत्व क्षमता का सशक्त माध्यम बन चुकी है। संयुक्त राष्ट्र संघ से लेकर विभिन्न वैश्विक तकनीकी मंचों तक हिन्दी की अनुगूँज प्रमाणित करती है कि यह भाषा आधुनिकता और परंपरा का अद्भुत समन्वय है। इस विशेष कार्यक्रम का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (नेशनल एजुकेशन पॉलिसी) के उन दूरगामी संकल्पों के साथ एकाकार होना था, जो शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर मातृभाषा और भारतीय भाषाओं की अनिवार्यता को रेखांकित करते हैं। यह संगोष्ठी इस विचार पर केंद्रित रही कि हिन्दी को केवल भावनाओं की अभिव्यक्ति का साधन न मानकर उसे उच्चस्तरीय अनुसंधान (एडवांस्ड रिसर्च), वैज्ञानिक नवाचार (साइंटिफिक इनोवैशन) और ज्ञान-आधारित समाज (नॉलेज सोसाइटी) की 'ज्ञान-भाषा' के रूप में प्रतिष्ठित किया जाए।

संगोष्ठी के दौरान विद्वानों ने इस तथ्य पर बल दिया कि वास्तविक 'स्वराज' तब तक अधूरा है जब तक हमारा चिंतन और मौलिक शोध अपनी भाषा में न हो। हिन्दी की वैश्विक प्रतिष्ठा का अर्थ केवल इसकी प्रसार संख्या से नहीं, बल्कि इसकी उस सांस्कृतिक शक्ति से है जो दुनिया को शांति, सहिष्णुता और 'वसुधैव कुटुंबकम' का संदेश देती है। कार्यक्रम ने यह स्पष्ट किया कि हिन्दी वह सांस्कृतिक प्राणवायु है जो भारत की विविधतापूर्ण बोलियों और प्रादेशिक भाषाओं को एकता के सूत्र में पिरोकर एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण करती है। इस आयोजन का उद्देश्य प्रतिभागियों के भीतर उस भाषाई स्वाभिमान को पुनर्जागृत करना था, जिसके माध्यम से वे वैश्विक पटल पर बिना किसी हीन भावना के अपनी पहचान स्थापित कर सकें।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. रामसुधार सिंह, विशिष्ट अतिथि प्रो. आभा गुप्ता ठाकुर एवं सारस्वत अतिथि प्रो. कमलेश कुमार द्विवेदी की महनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के माननीय निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने की।

अतिथि परिचय

प्रो. आभा गुप्ता ठाकुर

प्रो. आभा गुप्ता ठाकुर काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बी.एच.यू.), वाराणसी के कला संकाय स्थित हिन्दी विभाग में एक वरिष्ठ आचार्या, प्रखर आलोचक, कवयित्री और कुशल रंगकर्मी हैं। उनकी पहचान एक ऐसी विदुषी के रूप में है जिन्होंने अकादमिक शोध और रचनात्मकता के बीच एक सुंदर संतुलन बनाया है।

उनकी शैक्षणिक यात्रा अत्यंत गौरवशाली रही है; वे दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित लेडी श्रीराम कॉलेज की सर्वश्रेष्ठ छात्रा रह चुकी हैं। उनके लेखन में स्त्री विमर्श, आधुनिक रंगमंच और मानवीय संवेदनाओं का गहरा पुट मिलता है। उनकी प्रमुख कृतियों में काव्य संग्रह 'तुम शिव नहीं हो!' ने पाठकों का ध्यान आकर्षित किया, वहीं 'समय के निकष पर मोहन राकेश का रंगकर्म' और 'रंग यात्रा' जैसी पुस्तकें नाटक और रंगमंच की आलोचना में महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ मानी जाती हैं।

साहित्यिक उपलब्धियों के कारण उन्हें 'द संडे इंडियन' द्वारा 21वीं सदी की 111 प्रभावशाली लेखिकाओं की सूची में स्थान दिया गया है। शिक्षण और लेखन के साथ-साथ वे रंगमंच के व्यावहारिक पक्ष से भी जुड़ी हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय स्तर पर कई नाटकों का सफल निर्देशन किया है। वर्तमान में, अध्यापन के अतिरिक्त वे 'रिसर्च एंड टीचिंग कोलैबोरेशन कमेटी', इंस्टिट्यूट ऑफ एमिनेंस, बी.एच.यू., वाराणसी की सदस्य के रूप में विश्वविद्यालय के वैश्विक शैक्षिक मानकों को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। उनका व्यक्तित्व नई पीढ़ी के शोधार्थियों और लेखकों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

प्रो. राम सुधार सिंह

प्रो. राम सुधार सिंह हिन्दी साहित्य जगत के एक प्रतिष्ठित विद्वान, आलोचक और प्रखर शिक्षाविद् हैं। उनका अकादमिक करियर मुख्य रूप से वाराणसी के विख्यात उदय प्रताप (स्वायत्तशासी) कॉलेज से जुड़ा रहा है, जहाँ उन्होंने हिन्दी विभाग के अध्यक्ष और कॉलेज के प्राचार्य के रूप में अपनी सेवाएँ दीं।

उनकी पहचान एक गंभीर शोधकर्ता और संपादक के रूप में भी है। वे अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका 'अनुकृति' के संपादक हैं, जो शोधार्थियों के बीच काफी लोकप्रिय है। प्रो. सिंह की लेखन शैली में भारतीय संस्कृति, लोक जीवन और क्षेत्रीय इतिहास का अनूठा संगम देखने को मिलता है। उनकी प्रमुख कृतियों में 'चलो मन तुम काशी' और चंदौली के स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित ऐतिहासिक पुस्तकें शामिल हैं, जो क्षेत्रीय इतिहास के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

वे वर्तमान में विभिन्न साहित्यिक समितियों के सदस्य और मार्गदर्शक के रूप में हिन्दी साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं। उनका जीवन और कार्य हिन्दी भाषा के उत्थान और सांस्कृतिक चेतना के प्रसार के प्रति समर्पित हैं।

प्रो. कमलेश कुमार द्विवेदी

प्रो. कमलेश कुमार द्विवेदी एक अत्यंत प्रतिभाशाली और बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं, जिन्होंने चिकित्सा, शिक्षा, प्रशासन और साहित्य के क्षेत्रों में समान रूप से अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है। वर्तमान में, वे भारत सरकार के भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग (एन.सी.आई.एस.एम.) में आयुर्वेद बोर्ड के सदस्य के रूप में एक महत्वपूर्ण नीति-निर्धारक की भूमिका निभा रहे हैं, जहाँ वे देश भर में आयुर्वेद शिक्षा के मानकों, पाठ्यक्रम सुधार और चिकित्सा पद्धतियों के आधुनिकीकरण की दिशा में सक्रिय हैं। शैक्षणिक रूप से, वे प्रतिष्ठित राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय और चिकित्सालय, चौकाघाट, वाराणसी के कायचिकित्सा और पंचकर्म विभाग के अध्यक्ष एवं सह-आचार्य हैं। उनकी उच्च शिक्षा और पी-एच.डी. काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के आयुर्वेद संकाय से संपन्न हुई, जहाँ उन्होंने वृद्धावस्था के रोगों और उनके मानसिक स्वास्थ्य पर आयुर्वेद के सकारात्मक प्रभावों पर गहन शोध किया है। एक कुशल चिकित्सक के रूप में उनकी ख्याति कायचिकित्सा और पंचकर्म के क्षेत्र में दूर-दूर तक फैली हुई है।

प्रशासनिक और चिकित्सा उत्तरदायित्वों के साथ-साथ, प्रो. द्विवेदी हिन्दी साहित्य जगत के एक प्रखर नक्षत्र हैं। वे एक लोकप्रिय कवि और गीतकार के रूप में राष्ट्रीय काव्य-मंचों पर अपनी ओजस्वी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। उनकी हालिया प्रकाशित कृति 'अंतस-सौरभ' (2025) और कविता संग्रह 'मेरे गीत समर्पित उसको' उनकी गहरी संवेदनशीलता और भाषाई पकड़ का प्रमाण हैं। वे न केवल प्राचीन आयुर्वेदिक ज्ञान को वैज्ञानिक आधार पर पुनर्स्थापित करने के लिए समर्पित हैं, बल्कि अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं को भी नई ऊर्जा दे रहे हैं। उनका जीवन और कार्य वाराणसी की उस महान परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ शास्त्र और साहित्य, चिकित्सा और चिंतन का अद्भुत समन्वय पाया जाता है। वे वर्तमान में आयुर्वेद की वैश्विक स्वीकार्यता और हिन्दी साहित्य की समृद्धि के लिए एक सेतु के रूप में कार्य कर रहे हैं।

विस्तृत रूप में कार्यक्रम

प्रो. आशीष श्रीवास्तव

अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आई.यू.सी.टी.ई.) द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस समारोह के अवसर

पर स्वागत उद्बोधन देते हुए प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने हिन्दी के प्रति बदलती कार्यशैली और स्कूली शिक्षा की वर्तमान विसंगतियों पर गंभीर विचार साझा किए।

संस्थान में हिन्दी का बढ़ता महत्व प्रो. श्रीवास्तव ने अपने उद्बोधन की शुरुआत माननीय निदेशक प्रो. पी.एन. सिंह की कार्यशैली की सराहना करते हुए की। उन्होंने उल्लेख किया कि आई.यू.सी.टी.ई. में हिन्दी को न केवल एक दिवस के रूप में मनाया जा रहा है, बल्कि संस्थान के दैनिक कार्यों और कार्यक्रमों में इसे पर्याप्त अहमियत दी जा रही है। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में संस्थान के भीतर हिन्दी के प्रयोग को लेकर एक सकारात्मक परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

स्कूली शिक्षा और भाषाई असमानता पर चिंता प्रो. श्रीवास्तव ने स्कूली शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य पर गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने ऐतिहासिक संदर्भ देते हुए बताया कि कोठारी कमीशन ने 'कॉमन स्कूल सिस्टम' की सिफारिश की थी, जिसे दो राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों ने भी समर्थन दिया, लेकिन धरातल पर हम उस समानता को प्राप्त नहीं कर सके। उन्होंने कहा कि हमने भारतीय समाज को स्कूली शिक्षा के आधार पर और अधिक विभाजित कर दिया है। 'नवोदय विद्यालय' जैसी श्रेणियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने तर्क दिया कि ग्रामीण प्रतिभाओं के नाम पर वर्गीकरण करना समाज में एक नया पैरामीटर जोड़ने जैसा है, जबकि प्रतिभा के मापन का कोई एक निश्चित पैमाना नहीं हो सकता।

अंग्रेजी के प्रभुत्व और नई शिक्षा नीति का द्वंद्व राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यद्यपि नीति ने मातृभाषा और प्रादेशिक भाषाओं पर बहुत जोर दिया है, लेकिन हमारे चारों ओर गाँवों से लेकर शहरों तक अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों का ही वर्चस्व है। उन्होंने एक कड़वी सच्चाई की ओर ध्यान आकर्षित किया कि आज हम हिन्दी पर भाषण तो दे रहे हैं, लेकिन वही बच्चे घर जाकर 'नेटफ्लिक्स' जैसी अंग्रेजी सामग्री में खो जाते हैं। यह विरोधाभास हिन्दी के वास्तविक विकास के मार्ग में एक बड़ी बाधा है।

निष्कर्ष और भविष्य का मार्ग अंत में, उन्होंने आईयूसीटी के शिक्षकों और प्रतिभागियों से आह्वान किया कि हिन्दी को केवल वर्ष में एक बार 'सम्मान' देने या किसी एक दिवस तक सीमित रखने के बजाय इसे साल भर के

कार्यक्रमों का हिस्सा बनाया जाए। उन्होंने संकल्प लिया कि यहाँ से प्रशिक्षित होकर जाने वाले शिक्षक देश भर में इस विचार को फैलाएँ ताकि हिन्दी को दैनिक जीवन में अपनी स्वाभाविक जगह मिल सके। हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ एक बार फिर से।

प्रो. राम सुधार सिंह

अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आई.यू.सी.टी.ई.), वाराणसी द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस एवं हिन्दी सप्ताह समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. राम सुधार सिंह ने एक अत्यंत प्रभावी और प्रेरणादायी उद्बोधन दिया। उन्होंने हिन्दी को 'राजभाषा' की संवैधानिक सीमाओं से बाहर निकालकर उसे 'जनता के स्वाभिमान और आत्मविश्वास' की भाषा के रूप में प्रस्तुत किया। उनके भाषण का मुख्य स्वर यह था कि हिन्दी किसी भी कालखंड में सत्ता की भाषा नहीं रही, बल्कि यह सदैव आमजन, किसानों, मजदूरों और संतों की भाषा बनी रही।

प्रो. सिंह ने ऐतिहासिक संदर्भ देते हुए कहा कि जिस समय देश में फारसी और अंग्रेजी राजभाषाएँ थीं, उन्हीं कालखंडों में हिन्दी का 'स्वर्णकाल' आया। कबीर, तुलसी, निराला और प्रसाद जैसे महान साहित्यकारों ने सिद्ध किया कि श्रेष्ठ साहित्य के सृजन के लिए राजकीय संरक्षण की नहीं, बल्कि लोक-संवेदना की आवश्यकता होती है। उन्होंने हिन्दी की शब्द-संपदा की तुलना अंग्रेजी से करते हुए कहा कि हिन्दी में अन्य भाषाओं के शब्दों को अपनी प्रकृति के अनुसार ढाल लेने की अद्भुत क्षमता है। 'लालटेन' और 'रेलगाड़ी' जैसे शब्दों का उदाहरण देते हुए उन्होंने हिन्दी की इस समावेशी और जीवंत शक्ति को रेखांकित किया।

दक्षिण भारत और उत्तर भारत के बीच भाषा विवाद पर चर्चा करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि हिन्दी किसी पर 'लादी' नहीं गई है। उन्होंने गांधी, सुभाष चंद्र बोस और तिलक जैसे अहिन्दी भाषी नेताओं का स्मरण कराया, जिन्होंने देश की एकता के लिए हिन्दी की वकालत की थी। उन्होंने तर्क दिया कि जैसे हमारी मातृभाषा भोजपुरी या अवधी है, वैसे ही हिन्दी पूरे राष्ट्र की संपर्क भाषा है। प्रो. सिंह ने वैश्विक संदर्भों में फादर कामिल बुल्के, लुसी गेस्ट और साईं जी माकिनो जैसे विदेशी विद्वानों के उदाहरण दिए, जिन्होंने हिन्दी को विश्व शांति, मानवता की भाषा माना।

अंत में, उन्होंने शिक्षकों के उत्तरदायित्व पर बल देते हुए कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से मातृभाषा में शिक्षा देना और चरित्रवान पीढ़ी का निर्माण करना ही सच्ची राष्ट्रभक्ति है। उन्होंने श्रोताओं से एक ठोस संकल्प

लेने का आह्वान किया कि वे हीन भावना का त्याग कर अपने दैनिक व्यवहार और विशेषकर बैंक चेक आदि पर हिन्दी में हस्ताक्षर करें, क्योंकि भाषा ही हमारे सांस्कृतिक अस्तित्व और स्वाभिमान की असली पहचान है।

प्रो. प्रेम नारायण सिंह

अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र (आई.यू.सी.टी.ई.), वाराणसी द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस और

पखवाड़ा समापन समारोह के अवसर पर केंद्र के निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में हिन्दी के व्यावहारिक प्रयोग और उसके प्रति गहरे आत्मविश्वास पर बल दिया। उन्होंने अपने दक्षिण भारत (विजयवाड़ा, मद्रास और हैदराबाद) के 12 वर्षों के दीर्घकालिक शिक्षण अनुभवों को साझा करते हुए एक महत्वपूर्ण तथ्य रखा कि हिन्दी का तथाकथित विरोध केवल 'राजनीतिक' है, जबकि वहां के सामान्य जनमानस और युवाओं में हिन्दी के प्रति सहज स्वीकार्यता और सम्मान है।

प्रो. सिंह ने 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' के गौरवशाली इतिहास और महात्मा गांधी के योगदान का स्मरण कराते हुए बताया कि तमिलनाडु जैसे राज्यों में हिन्दी सीखने वालों की संख्या अन्य राज्यों से कहीं अधिक है। उन्होंने न्यायमूर्ति गोपाल राव एकबोटे की पुस्तक 'राष्ट्रभाषा विहीन राष्ट्र' का विशेष उल्लेख करते हुए इस कड़वी सच्चाई को स्वीकार किया कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की वकालत अहिन्दी भाषियों ने की, जबकि हिन्दी भाषियों ने स्वयं इसके व्यवहार में उपेक्षा बरती है। उन्होंने तर्क दिया कि हिन्दी और अंग्रेजी के बीच का कृत्रिम द्वंद्व तभी समाप्त हो सकता है, जब हम अपने भीतर की 'हीन भावना' का त्याग करें और अपनी भाषाई पहचान के प्रति 'आत्मविश्वास' विकसित करें।

अपने व्यक्तिगत जीवन का प्रेरक उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि बैंक के आधिकारिक हस्ताक्षरों में हिन्दी का प्रयोग उनके लिए स्वाभिमान का प्रतीक है, जिसने बैंक कर्मियों के बीच भी उनकी एक विशिष्ट पहचान बनाई। उन्होंने जोर देकर कहा, "जो व्यक्ति स्वयं से प्रेम करेगा, वह अपनी भाषा, वेशभूषा और खानपान पर भी गर्व करेगा।" उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के ऐतिहासिक भाषण और वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के वैश्विक संबोधनों का उदाहरण देते हुए यह सिद्ध किया कि हिन्दी आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत के सांस्कृतिक गौरव की प्रखर आवाज़ बन चुकी है।

समारोह के अंत में उन्होंने वर्ष 2000 में रचित अपनी एक मौलिक कविता का पाठ किया, जिसका मुख्य संदेश यह था कि हिन्दी केवल 14 सितंबर को भाषणों और औपचारिकताओं तक सीमित न रहे, बल्कि इसे हमारे दैनिक आचरण और कार्यक्षेत्र का अभिन्न हिस्सा बनना चाहिए। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि सक्रिय सहभागिता ही किसी भी उत्सव की वास्तविक सफलता का आधार है।

प्रो. कमलेश कुमार द्विवेदी

कार्यक्रम में सारस्वत अतिथि प्रो. कमलेश कुमार द्विवेदी ने हिन्दी को केवल एक भाषा नहीं, बल्कि संस्कारों की जननी के रूप में व्याख्यायित किया। उन्होंने अपने उद्बोधन का प्रारंभ संस्कृत के श्लोकों से करते हुए कहा कि जब हम अपनी भाषा में संवाद करते हैं, तो उसमें एक विशेष प्रकार का 'अपनत्व' झलकता है।

प्रो. द्विवेदी ने वर्तमान पीढ़ी में बढ़ते 'अंग्रेजीकरण' पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि आज हम 'आयुर्वेद' को 'आयुरवेदा' और 'योग' को 'योगा' कहकर अपने ही मूल संस्कारों को भुला रहे हैं। उन्होंने अभिभावकों को आत्मचिंतन का संदेश देते हुए कहा कि आधुनिकता की होड़ में हम बच्चों को कॉन्वेंट स्कूलों में तो भेज रहे हैं, लेकिन वे अपनी मातृभाषा की गिनती (३६, ४६, ५६ इत्यादि) और पहाड़ों से पूरी तरह अनभिज्ञ होते जा रहे हैं। उनके अनुसार, यह अंग्रेजी पर बढ़ती निर्भरता हमारी बौद्धिक विरासत के लिए एक गंभीर संकट है।

अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करते हुए उन्होंने अपने तमिलनाडु प्रवास के एक संस्मरण का उल्लेख किया, जहाँ 15 दिनों तक हिन्दी न बोल पाने की तड़प के बाद एक गाजीपुर के युवक से मिलकर उन्हें असीम आनंद की प्राप्ति हुई। उन्होंने कहा कि जब हम पद की गरिमा भूलकर अपनी बोली (जैसे भोजपुरी) में बात करते हैं, तो वह हमारी जड़ों से जुड़ाव का सबसे सुंदर क्षण होता है। उन्होंने 'सामान्य और विशेष' का सिद्धांत देते हुए कहा कि पश्चिमी वेशभूषा के बीच शुद्ध खादी का कुर्ता-धोती और हिन्दी भाषा का प्रयोग व्यक्ति को भीड़ में 'विशेष' और सम्मानित बनाता है।

उन्होंने हिन्दी की शब्द-समृद्धि की तुलना अंग्रेजी से करते हुए बताया कि जहाँ अंग्रेजी में रिश्तों के लिए केवल 'आंटी' जैसे सीमित शब्द हैं, वहीं हिन्दी और उसकी बोलियों में 'आंटी' के स्थान पर चाची, मौसी, मामी जैसे अलग-अलग संबोधन हैं। उन्होंने दक्षिण भारत के लोगों की काशी और हिन्दी के प्रति अगाध श्रद्धा का वर्णन

करते हुए कहा कि उत्तर-दक्षिण का विवाद केवल राजनीतिक है। अंत में, उन्होंने सुझाव दिया कि हमें केवल 'हिन्दी दिवस' की औपचारिकता तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि प्रतिदिन एक नया हिन्दी शब्द सीखने और सिखाने का संकल्प लेना चाहिए। उन्होंने प्रो. रामसुधार सिंह के आह्वान का समर्थन करते हुए सभी से हिन्दी में हस्ताक्षर करने और अपनी भाषाई अस्मिता को बचाने की अपील की।

प्रो. आभा गुप्ता ठाकुर

संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि प्रो. आभा गुप्ता ठाकुर ने हिंदी, संस्कृति और औपनिवेशिक मानसिकता के

अंतर्संबंधों पर एक अत्यंत विद्वतापूर्ण और व्यवहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उन्होंने भाषा को केवल संवाद का माध्यम न मानकर उसे राष्ट्र की संप्रभुता और सांस्कृतिक जड़ों का आधार बताया।

प्रो. ठाकुर ने अपने मर्मस्पर्शी संस्मरण से उत्तर-दक्षिण विवाद समाप्त करने और उदारता की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने बताया कि कैसे एक कन्नड़ भाषी विदुषी को पुनश्चर्या कार्यक्रम (रिफ्रेशर कोर्स) में अपनी भाषा में बोलने से रोका गया। इस घटना के माध्यम से उन्होंने हिन्दी भाषियों को 'भाषाई उदारता' अपनाने की सलाह दी। उन्होंने जोर देकर कहा कि जब तक हम दूसरी भारतीय भाषाओं के प्रति संवेदनशील नहीं होंगे, तब तक हिन्दी को सर्व स्वीकार्य संपर्क भाषा बनाना कठिन होगा।

विउपनिवेशीकरण और भाषाई गौरव इटली के अपने अनुभवों को साझा करते हुए उन्होंने बताया कि विकसित देशों में अपनी भाषा पर गर्व करने की परंपरा है, जबकि भारत में अंग्रेजी बोलना सौभाग्य समझा जाता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि 'विउपनिवेशीकरण' (Decolonization) की प्रक्रिया तब तक अधूरी है, जब तक हम अपनी भाषा का गौरव नहीं समझते। उन्होंने फ्रांसिस बेकन का उदाहरण देते हुए बताया कि एक समय अंग्रेजी भी केवल चरवाहों की भाषा थी, लेकिन उसने अपनी गतिशीलता से विश्व में स्थान बनाया।

हिन्दी की शक्ति: लचीलापन और बहुवचनता प्रो. ठाकुर ने हिन्दी को 'बहुवचन की भाषा' और 'बोलियों का समुच्चय' बताया। उन्होंने कहा कि हिन्दी की असली ताकत उसका लचीलापन है। जैसे अंग्रेजी ने दुनिया भर के शब्दों को अपनाकर अपना भंडार भरा, वैसे ही हिन्दी को भी बिना किसी 'अतिरिक्त शुद्धतावाद' के दूसरी भाषाओं (जैसे मराठी का 'बिंदास' या तमिल के शब्द) को आत्मसात करना चाहिए। उन्होंने चेताया कि

अत्यधिक शुद्धतावाद किसी भी समृद्ध भाषा को संस्कृत या लैटिन की तरह केवल 'क्लासिकल' बनाकर सीमित कर देता है।

संस्कृति और रोजगार का प्रश्न उन्होंने एक अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदु उठाया कि भाषा हमारी संस्कृति से 'नाभि-नाल' की तरह जुड़ी है। 'जाना' के स्थान पर 'लौटकर आना' जैसे मुहावरे हमारे चक्रीय समय और पुनर्जन्म की अवधारणा को दर्शाते हैं। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों पर अंग्रेजी थोपने को 'अत्याचार' बताया, जिससे उनकी मौलिक सोच दब जाती है। प्रो. ठाकुर ने इस बात पर विशेष बल दिया कि जब तक हिन्दी को रोजगार की भाषा नहीं बनाया जाएगा, तब तक समाज में इसके प्रति वास्तविक बदलाव आना कठिन है।

निष्कर्ष अफ्रीकी लेखक गुग्गी वा थ्योंगो का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि हमें 'बनाम' (जैसे हिन्दी बनाम उर्दू या हिन्दी बनाम अंग्रेजी) की लड़ाई छोड़नी होगी। उन्होंने संदेश दिया कि यदि हम स्वयं का और अपनी भाषा का सम्मान करेंगे, तभी विश्व हमारा सम्मान करेगा। उन्होंने अंत में आह्वान किया कि मातृभाषा की जड़ों को मजबूत करके ही हम एक सशक्त राष्ट्रभाषा और अंतरराष्ट्रीय पहचान का निर्माण कर सकते हैं।

इस कार्यक्रम में डॉ. राजा पाठक, डॉ. ज्ञानेंद्र सिंह, डॉ. राज सिंह, डॉ. दीप्ति गुप्ता, डॉ. कुशाग्री सिंह और डॉ. अजय कुमार सिंह सहित समस्त अकादमिक व प्रशासनिक टीम की गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन को और अधिक महत्वपूर्ण बनाया। अंत में प्रो. अजय कुमार सिंह ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। यह संगोष्ठी इस निष्कर्ष के साथ संपन्न हुई कि यदि हम अपनी जड़ों से प्रेम करेंगे और हिन्दी को रोजगार व तकनीक की भाषा बनाने हेतु कटिबद्ध होंगे, तभी हम वैश्विक स्तर पर अपनी वास्तविक बौद्धिक और सांस्कृतिक पहचान को अक्षुण्ण रख पाएंगे। इस कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी ने किया।

हिन्दी सप्ताह समारोह के अंतर्गत राजभाषा के अन्य कार्यक्रम

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार, उसके साहित्यिक एवं अकादमिक प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिन्दी दिवस के अवसर पर अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में राजभाषा हिन्दी सप्ताह कार्यक्रम के अंतर्गत तीन दिवसीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। यह संपूर्ण कार्यक्रम केंद्र के राजभाषा अनुभाग द्वारा सुव्यवस्थित रूप से आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य केंद्र में कार्यरत शिक्षकों, अकादमिक एवं गैर-अकादमिक कर्मचारियों में हिन्दी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना तथा उनकी रचनात्मक एवं अभिव्यक्तिपरक क्षमताओं को मंच प्रदान करना था।

हिन्दी सप्ताह कार्यक्रम के अंतर्गत प्रथम दिवस दिनांक 09.09.2025 को सायं 04:30 से 05:30 बजे तक हिन्दी काव्य पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में कुल दस प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक

सहभागिता की। प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत काव्य रचनाओं का मूल्यांकन भावाभिव्यक्ति, उच्चारण, भाषा की शुद्धता तथा प्रस्तुति शैली के आधार पर किया गया। प्रतियोगिता में डॉ. ज्ञानेंद्र सिंह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्री अजीत कुमार सिंह को द्वितीय तथा सुश्री नेहा पटेल को तृतीय स्थान प्रदान किया गया। अन्य प्रतिभागियों की प्रस्तुतियाँ भी सराहनीय रहीं और कार्यक्रम की साहित्यिक गरिमा को बढ़ाने वाली सिद्ध हुईं।

द्वितीय दिवस दिनांक 10.09.2025 को सायं 04:30 से 05:30 बजे तक हिन्दी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कुल चौदह प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य हिन्दी भाषा में तार्किक चिंतन, विषय-वस्तु की स्पष्टता तथा प्रभावी वक्तृत्व कौशल को प्रोत्साहित करना था। प्रतिभागियों ने सामाजिक, शैक्षिक एवं समसामयिक विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। निर्णायकों के मूल्यांकन के आधार

पर डॉ. विजय कुमार राय को प्रथम स्थान, डॉ. अनिल कुमार को द्वितीय स्थान तथा श्री अनुभव कुमार पाण्डेय एवं श्री दधिबल सिंह चौहान को संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्रदान किया गया।

हिन्दी सप्ताह कार्यक्रम के तृतीय दिवस दिनांक 11.09.2025 को सायं 04:30 से 05:30 बजे तक निबंध

लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में कुल चौदह प्रतिभागियों ने सहभागिता की। निबंधों का मूल्यांकन विषय की प्रासंगिकता, विचारों की मौलिकता, भाषा-शैली एवं संरचना के आधार पर किया गया। प्रतियोगिता में डॉ. अनिल कुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्री अनिल कुमार राय एवं सुश्री नेहा पटेल को संयुक्त रूप से द्वितीय स्थान तथा श्री विकास जानू एवं श्री आनंद कुमार यादव को संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्रदान किया गया।

समग्र रूप से राजभाषा हिन्दी सप्ताह कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित ये सभी प्रतियोगिताएँ अत्यंत सफल रहीं। इन गतिविधियों से अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में हिन्दी भाषा के प्रयोग के प्रति सकारात्मक वातावरण का निर्माण हुआ तथा प्रतिभागियों में रचनात्मकता, आत्मविश्वास एवं भाषायी दक्षता का विकास हुआ। ऐसे आयोजन राजभाषा हिन्दी को सशक्त बनाने एवं उसके व्यापक प्रयोग की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन कार्यक्रमों का संयोजन प्रो. अजय कुमार सिंह, डॉ. सुनील कुमार त्रिपाठी एवं डॉ. अनिल कुमार सिंह ने किया।

समाचार पत्रों में

हिन्दी दैनिक
भारत कनेक्ट
www.bharatconnect.in

वाराणसी/कौशाम्बी/मऊ

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र वाराणसी में हिन्दी दिवस कार्यक्रम एवं हिन्दी सप्ताह समारोह का भव्य आयोजन

भारत कनेक्ट संवाददाता

वाराणसी। अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र वाराणसी में हिन्दी दिवस के अवसर पर ह्हिन्दी दिवस कार्यक्रम एवं हिन्दी सप्ताह समारोहह्ल का भव्य आयोजन हुआ जिसमें 9 सितम्बर से 14 सितम्बर तक विभिन्न कार्यक्रमों यथा हिन्दी कविता पाठ,हिन्दी भाषण प्रतियोगिता,हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता,हिन्दी में कार्यालयीय कार्य विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगलाचरण व मां सरस्वती, महामना पं.मदन मोहन मालवीय की प्रतिमा पर पुष्पार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर हुआ । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उदय प्रताप स्वायत्त महाविद्यालय, वाराणसी के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष,प्रो.राम सुधार सिंह,सारस्वत अतिथि आयुर्वेद परिषद्,राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग,भारत सरकार के सदस्य प्रो.कमलेश कुमार द्विवेदी एवं विशिष्ट अतिथि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के हिन्दी विभाग की प्रो.आभा गुप्ता ठाकुर रहे। समारोह की अध्यक्षता आईयूसीटीई के निदेशक प्रो.प्रेम नारायण सिंह ने की। अपने उद्बोधन में प्रो.राम सुधार सिंह पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग,उदय प्रताप स्वायत्त महाविद्यालय वाराणसी ने कहा कि राजभाषा सत्ता की भाषा होती है । अलग -अलग काल तथा देश में भले ही राजभाषा के रूप में संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी भाषाएँ उपयोग की जाती थीं तब भी जनता की भाषा के रूप में हिन्दी ही रही हैं हिन्दी कभी सत्ता की भाषा नहीं रही है यह तो किसानों,फकीरों अर्थात आम -जनमानस के साथ-साथ यह देश को एकता के सूत्र में बांधने वाली भाषा के रूप में भी रही है उन्होंने कहा कि सुदूर अर्थात पूरब से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण को एक सूत्र में बांधने का काम हिन्दी करती है। देश की सामाजिक -सांस्कृतिक विविधता को जानने हेतु हिन्दी को जानना अति आवश्यक है । प्रो.कमलेश कुमार द्विवेदी सदस्य,आयुर्वेद परिषद्,राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग,भारत सरकार ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें अपनी संस्कृति की पहचान अपनी मातृभाषा से मिलती है यह हमें संस्कार देती है। इस रूप में देश में हिन्दी अपना प्रमुख स्थान रखती है उन्होंने कहा कि आज अंग्रेजी ने हिन्दी का बहुत नुकसान किया है किन्तु हमें अंग्रेजियत को त्यागकर हिन्दी को अपनाने की जरूरत है हिन्दी का संस्कार देने में हमारे माता- पिता,गुरुजनों और बड़ों का बहुत योगदान है। प्रो.आभा गुप्ता ठाकुर हिन्दी विभाग,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी ने कहा कि हिन्दी भाषियों को उदारता को अपनाना चाहिए और अतिरिक्त शुद्धतावाद को त्यागकर लचीला बनना होगा तभी हमारी हिन्दी अति संपन्न होगी क्योंकि हिन्दी भाषा में वह ताकत है जो स्वयं का अनुकूलन करती है और दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपने में ढाल लेती है उन्होंने जोर देकर कहा कि हिन्दी को रोजगार की भाषा के रूप में स्थापित करना होगा।

सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता को जानने के लिए हिंदी ज्ञान आवश्यक

अंतर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केंद्र में 'हिंदी दिवस कार्यक्रम एवं हिंदी सप्ताह समारोह' में मुख्य अतिथि ख्यात साहित्यकार प्रो. रामसुधार सिंह ने कहा कि देश को एकता के सूत्र में बांधने वाली भाषा है हिंदी। सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता को

प्रो. रामसुधार सिंह।

जानने के लिए हिंदी को जानना अति आवश्यक है। सारस्वत अतिथि आयुर्वेद परिषद्, राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग के सदस्य प्रो कमलेश कुमार द्विवेदी ने कहा कि हमें अंग्रेजियत को त्यागकर हिंदी को अपनाने की जरूरत है। बीएचयू हिंदी विभाग की प्रो. आभा गुप्ता ठाकुर ने कहा कि हिंदी भाषा में वह ताकत है जो स्वयं का अनुकूलन करती है, और दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपने में ढाल लेती है। हिंदी को रोजगार की भाषा के रूप में स्थापित करना होगा, तभी यह राष्ट्रभाषा के रूप में अपना स्थान बना पाने में सक्षम होगी। अध्यक्षता करते हुए केंद्र निदेशक प्रो. प्रेम नारायण सिंह ने कहा कि हिंदी हमें राष्ट्र एकता और राष्ट्र गौरव का पाठ पढ़ाती है। हिंदी भाषियों को हीन भावना से ऊपर उठकर अपनी भाषा- संस्कृति पर गौरव-बोध की आवश्यकता है।

"दैनिक जागरण", पृष्ठ - 03, दिनांक: 15.09.2025

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र में आयोजित हिन्दी दिवसपर मंचासीन अतिथिगण।

हिन्दी का संस्कार देने में हमारे अभिभावकों एवं गुरुजनों का बहुत योगदान

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र में हिन्दी दिवस के अवसर पर 'हिन्दी दिवस कार्यक्रम एवं हिन्दी सप्ताह समारोह' का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि उदय प्रताप स्वायत्त महाविद्यालय हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष, प्रोफेसर राम सुधार सिंह ने कहा कि हिन्दी कभी सत्ता की भाषा नहीं रही है यह तो किसानों, फकीरों अर्थात् आम-जनमानस के साथ-साथ यह देश को एकता के सूत्र में बांधने वाली भाषा के रूप में भी रही है। आयुर्वेद परिषद्, राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग, भारत सरकार के सदस्य प्रोफेसर कमलेश कुमार द्विवेदी ने कहा कि आज अंग्रेजी ने हिन्दी का बहुत नुकसान किया है किन्तु हमें अंग्रेजियत को त्यागकर हिन्दी को अपनाने की जरूरत है। विशिष्ट अतिथि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के हिन्दी विभाग की प्रोफेसर आभा गुप्त ठाकुर ने कहा कि हिन्दी को रोजगार की भाषा के रूप में स्थापित करना होगा जिससे यह राष्ट्रभाषा के रूप में अपना स्थान बना पाने में सक्षम बनेगी। अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर-प्रेम नारायण सिंह, निदेशक, आईयूसीटीई ने कहा कि हिन्दी हमारे आत्म-सम्मान की भाषा है जो हमें राष्ट्र एकता और राष्ट्र गौरव का पाठ पढ़ाती है। अतिथियों का स्वागत प्रोफेसर आशीष श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर सुनील कुमार त्रिपाठी एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर. अजय कुमार सिंह, ने किया।

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

प्रो. प्रेम नारायण सिंह

निदेशक, अ.वि.अ.शि.के., बीएचयू, वाराणसी

संरक्षक

प्रो. आशीष श्रीवास्तव

संकाय प्रमुख, शैक्षणिक एवं शोध, अ.वि.अ.शि.के., बीएचयू, वाराणसी

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ.सुनील कुमार त्रिपाठी

सहायक आचार्य, अ.वि.अ.शि.के., वाराणसी

तकनीकी टीम

श्री कुलदीप पाण्डेय, सिस्टम एनालिस्ट

श्री राणा प्रताप राव, इंजीनियर हार्डवेयर

श्री विकास जानू, वेबमास्टर

श्री आनंद जायसवाल, सर्वर इंजीनियर

श्री अभिज्ञान कुमार श्रीवास्तव, तकनीशियन (सॉफ्टवेयर प्रबंधन)

श्री शुभम प्रजापति, तकनीकी सहायक (मल्टीमीडिया)

प्रशासनिक टीम

डॉ. नन्द लाल, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

डॉ. अनिल कुमार सिंह, एस.ओ. (प्रशासन)

श्री आनंद कुमार यादव, एल.डी.सी.

लेखा अनुभाग

श्री एम.आर. रामसुब्रमण्यम, प्रशासनिक अधिकारी (वित्त)

डॉ. विजय कुमार राय, सहायक

सुश्री पूजा सिंह, एलडीसी

सुश्री नेहा पटेल, एलडीसी

कार्यक्रम की झलकियाँ

अन्तर विश्वविद्यालय अध्यापक शिक्षा केन्द्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
आईयूसीटीई परिसर, सुंदर बगिया
नरिया-बीएलडब्ल्यू रोड, वाराणसी - 221005
उत्तर प्रदेश

संपर्क नंबर.: 0542-2368823
ईमेल: directoroffice@iucte.ac.in